THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.17

भारत में जातिवाद: एक समाजशास्त्रीय अनुशीलन

डॉ. श्याम नारायण वर्मा

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, महामाया राजकीय महाविद्यालय, श्रावस्ती

सारांश-

भारतीय समाज के महत्वपूर्ण आधार स्तम्भों में जाति व्यवस्था भी सुमार रही है इसी जाति व्यवस्था का विकृत रूप जातिवाद, छुआ-छूत, भेदभाव आदि के रूप में धीरे-धीरे सामने आने लगा और आज पश्चिमीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण तकनीकीकरण जैसी तमाम प्रक्रियाओं के चलते भी जातिवादी जिन्न भारतीय जनमानस के केन्द्र में विशैले सर्प जैसा कुन्डली मारे बैठा है। जातिवादी सोंच और जातिवादी राजनीति आदि ने भारतीय समाज का भारी नुकशान किया है और कर रहा है जातिमुक्ति ही भारतीय समाज को अपनी आर्थिक तरक्की की राह को सहज, सुगत, सरल बना सकती है साथ ही आर्थिक तरक्की में तीव्रता ला सकती है इस सच्चाई को स्वीकार करते हुए हर भारतीय को जातिगत हित से ऊपर उठकर देशहित/राष्ट्रीय हित को प्रवल समर्थन देना होगा तभी भारत विश्व में आर्थिक शक्तियों का सामना कर सकेगा अन्यथा नहीं ?

भारतीय परिप्रेक्ष्य में आठ कनौजिया नौ चूल्हे वाली कहावत पर अगर हम गौर करें तो यह सत्य प्रतीत होता है कि ऊंच और नीच की भावना उत्कृष्टता और पावित्र्य की भावना, अपनी ही जाति और उपजाति की श्रेष्ठता की भावना उसी को प्राथमिकता देने की भावना भारतीय समाज में जातिवाद की लता को भली-भांति पुष्पित प्रल्लवित होने का माकूल वातावरण तैयार किया है।

भारतीय समाज लगभग 4000 जातियों और लगभग 25000 उपजातियों वाला समाज है जहां पर नाना प्रकार के जातिये समाज, जातीये सभाएं जातीये पंचायते जो अपने-अपने समाज और गुट को प्रोत्साहन दें रही हैं उसी को प्रश्रय देना, उसी का पक्षपात करना, और उसी को सर्वोपरि मानने जैसी संकीर्ण सोंच जातिवाद का सूचक है। जातिवाद और कुछ न होकर एक ऐसी भावना है जो अपनी जाति के प्रति अतिशय प्रेम का प्रकीर्णन करती है और दूसरी जातियों से न केवल अलग करती है बल्कि अलग-थलग महसूस करने को विवश करता है।

के0एम0 पणिक्कर ने ठीक ही कहा है कि 'राजनीति की भाषा में उपजाति के प्रति निष्ठा का भाव ही जातिवाद है।'' भले ही संविधान की धारा-15 में प्रावधान किया हो कि कोई भी राज्य किसी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, मूलवंश, जाति, प्रजाति, रंग, लिंग, जन्म स्थान अथवा इनमें से किसी के आधार पर कोई भी नागरिक, संगठन, संस्था, भेद-भाव नहीं करेगा। संविधान में अस्पृश्यता

भी समाप्त कर दी गयी है। कहा भी गया है कि केवल धर्म, मूलवंश, जाति,लिंग, जन्मस्थान अथवा इनमें से किसी के आधार पर कोई नागरिक दुकानों, सार्वजनिक भोजनालयों, होटलों तथा सार्वजनिक मनोरंजन के स्थानों में प्रवेश के, अथवा पूर्ण या आंशिक रूप में राज्य निधि से पोषित अथवा साधारण जनता के उपयोग के लिए समर्पित कुओं, तालाबों, स्नान घाटों, सड़कों तथा सार्वजनिक समागम स्थानों के उपयोग के बारे में किसी भी निर्योग्यता, दायित्व निर्वंधों अथवा शर्त के अधीन न होगा। धारा-17 में कहा गया है कि अस्पृश्यता का अंत किया जाता है और उसका किसी भी रूप में आचरण निषिद्ध किया जाता है। इतनी संवैधानिक आचार संहिताओं के बावजूद भी भारत में जातिवाद की जड़ें हिलने का नाम नहीं ले रहीं हैं।

जातिवाद के परिणामस्वरूप् पक्षपात और भ्रष्टाचार अपनी पूरी सेना के साथ आक्रमण करता है योग्यता दक्षता शिक्षा इत्यादि एक तरफ रखी रहती है और केवल जातिवाद के आधार पर नीचे से उच्च पदों तक चाहे नियुक्तियां हों या फिर अन्य सुविधाएं, सहायताएं, दी जाती हैं और अनेकों प्रकार के अन्य लाभ पहुंचाये जाते हैं जातिवाद स्वयं संविधान का विरोधी तत्व है साथ ही राष्ट्रीय एकता और अखण्डता तथा प्रजातंत्र के रास्ते में सबसे बड़ा अवरोधक कारक है।

जातिवाद निवारण के उपायों पर अगर गौर किया जाए तो कहा जा सकता है कि समाज से जातिवादी भावना को समाप्त किये बिना एक स्वस्थ लोकतंत्र की स्थापना नहीं की जा सकती है इसके लिए जरूरी है कि

01. सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों पर बल दिया जाये, देश के सभी राजनीतिक इल इसमें अपनी स्वार्थपूरित आहुति दें।

02. सामाजिक असमानता और स्तरीकरण को समाप्त करने के लिए देश की शिक्षण व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन लाया जाये।

03.संविधानिक व्यवस्था से इतर ऐसे कानून निर्माण की विशेष जरूरत है कि जिसमें जाति प्रथा और जातिवाद को पनपने का अवसर ही न मिल सके।

04. इंटरनेट, चलचित्रों, नाटकों आदि के माध्यम से समाज में जातिवाद विरोधी प्रचार-प्रसार करके।

05. विभिन्न जातियों के मध्य प्रीतिभोजों का आयोजन किया जाये, संयुक्त सम्मेलनों का आयोजन इस महाअभियान में कारगर साबित हो सकता है।

06. जाति से ऊपर उठकर योग्यता और पात्रता के आधार पर युवाओं को नौकरी आदि में मौका दिया जाए।

07. मानव मात्र समान है कोई छोटा नहीं कोई बड़ा नहीं की भावना का विस्तार किया जाये।

08. समाज सुधारक, विचारक, कवि, लेखक, पत्रकार, अधिकारी तथा अन्य ऐसे लोग जिनके हाथ में जनमत मोड़ने की शक्ति और साधन सत्ता है उनके प्रयास की जरूरत पर बल दिया जाये।

आस्थावान भारतीय समाज में सबका मालिक एक है, जाति पांति पूछंहि नहि कोई हरि का भजै सो हरि का होई जैसी तमाम आध्यात्मिक आचार संहिताओं के प्रचलित होने के बावजूद भी जातिवादी जहर कम होने का नाम नहीं ले रहा है। वास्तव में हजारों वर्षों से जड़ जमा चुकी जातिवादी वेल को उखाड़ने के लिए संयुक्त प्रयास सबसे आवश्यक उपायों में से एक प्रभावशाली उपाय नजर आजा है, अब जरूरत है कि सरकार और आम जनमानस, समाज सुधारक, सेवाभावी संस्थाएं, अधिकारी, संचार माध्यम,

इलेक्ट्रानिक मीडिया, इंटरनेट, इंस्टाग्राम आदि के समेकित उपयोग और प्रयास से ही इस व्यवस्था को समाज से समाप्त किया जा सकता है इस भावना से सभी को अवगत होना पड़ेगा कि जाति से बड़ी मानवतावादी,जमात वादी भावना है। जाति से जमात की ओर अगर हम सभी लोग जाने का ईमानदारी पूर्ण प्रयास करेगे तो निश्चय ही जातिवाद यथासीघ्र समाज से समाप्त हो जायेगा। एक मानव को मानव की नजरिये से देखना होगा न कि जातिवादी चस्में से समाज में ऐसा वातावरण तैयार कर इस बुराई को जड़ से समूल उखाड़ा जा सकता है। पुरानी पीढ़ी अगर नई पीढ़ी को जातिवाद से होने वाले फायदे नुकशान से अवगत कराने का काम करेगी तो आगे चलकर एक ऐसे समाज का निर्माण होगा जिसमें वर्ग दिखायी देगा जाति नहीं क्योंकि जाति जहां हमें विकास करने से रोकती है वहीं वर्ग हमें आगे बढ़ने की खुली छुट देता है तो आज जरूरत है कि एक जातिमुक्त भारत की जहां सभी को उनके कार्यों उनकी योग्यताओं और पात्रताओं से आंका जाये न कि जाति के आधार पर। एक श्रेष्ठ भारत की संकल्पना कभी भी जातिवादी जहर के जीवित रहने से पूरी नहीं की जा सकती, देश को जातिवादी राजनीति से मुक्त होना होगा इसका महनीय गुरुतर दायित्व हमारे देश के नेताओं को लेना होगा तभी देश में अमन चयन कायम करने के साथ-साथ आर्थिक विकास की दिशा में तेजी से आगे बढ़ा जा सकेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः-

01. सामाजिक विघटन और भारतः श्री श्री कृष्ण भट्ट, हिंन्दी ग्रथ अकादमी, सम्मेलन भवन कदम कुआँ पटना पेज न.433.468।

02. भारत का राष्ट्रीय आंदोलनः बिपिन चंद्र, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि. 4697/3, 21 ए अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली।

03. भारतीय समाज का अध्ययन डॉ. एम. एम. लवानिया, रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर।

04. ग्रामीण समाजशास्त्र, डॉ. एम.एम. लवानिया,शशी के जैन, रिसर्च पब्लिकेशन तिरपोलिया बाजार जयपुर-2

05. भारत में सामाजिक आन्दोलन- जी.के.अग्रवाल, एस.बी.पी.डी. पलिशिंग हाउस।

06. भारत में समाजः संरचना, संगठन एवं परिवर्तन- डॉ. धर्मवीर महाजन एवं डॉ. कमलेश महाजन, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली।

Cite this Article:

वर्मा. डॉ. श्याम नारायण ,“ भारत में जातिवाद: एक समाजशास्त्रीय अनुशीलन” The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-150–152,Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. श्याम नारायण वर्मा

For publication of Research Paper title

भारत में जातिवाद: एक समाजशास्त्रीय अनुशीलन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.17